Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं उच्च शिक्षा

संध्या वर्मा*

* शहीद पद्मधर सिंह महाविद्यालय, सतना (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय ज्ञान परंपरा ने व्यक्ति के जीवन का सर्वांगीण विकास किया है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों, रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों ने शिक्षा के नवीन आयामों– जैसे विज्ञान, कला, दर्शन, चिकित्सा और राजनीति में उत्कृष्ट भूमिका निभाई है। सुसंस्कृत ज्ञान से ही संस्कारवान समाज का निर्माण होता है। भारत की नवीन शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा को वैश्विक परिदृश्य में उत्कृष्ट बनाने हेतु प्राचीन ज्ञान परंपरा के दृष्टिकोण को जोड़ा गया है ताकि युवाओं का सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और व्यावसायिक विकास हो सके।

प्रस्तावना – प्राचीन काल से ही गुरु–शिष्य परंपरा और गुरुकुल व्यवस्था भारतीय शिक्षा की पृष्ठभूमि रही है। भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और काशी जैसे विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केंद्र थे, जहाँ विदेशों से भी शिक्षार्थी ज्ञान अर्जन के लिए आते थे। वर्तमान में इस गौरवमयी परंपरा को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से पुन: स्थापित करने की आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और वैज्ञानिक जीवन पद्धतियों में से एक है, जिसका मूल उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना रहा है। प्राचीन भारत में शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं थी, बल्कि यह आत्मबोध और चरित्र निर्माण की एक पवित्र प्रक्रिया थी। ऋग्वेद काल से लेकर उपनिषद, पुराण और स्मृतियों तक, हमारे ग्रंथों ने विज्ञान, गणित, चिकित्सा, राजनीति और दर्शन जैसे विषयों में ज्ञान के ऐसे प्रतिमान स्थापित किए, जो आज भी प्रासंगिक हैं। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे महान विश्वविद्यालय इस समृद्ध परंपरा के जीवंत उदाहरण रहे हैं, जहाँ वैश्विक स्तर के शोध और चिंतन को बढ़ावा दिया जाता था।

पिछले कुछ शताब्दियों में औपनिवेशिक प्रभाव के कारण इस महान परंपरा का लोप होता गया और शिक्षा प्रणाली केवल सूचनाओं के आदान–प्रदान तक सीमित रह गई। वर्तमान समय में, जब वैश्विक समाज नैतिक पतन और मानसिक तनाव जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, भारतीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 इसी दिशा में एक सराहनीय प्रयास है, जो उच्च शिक्षा को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ–साथ प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ने का संकल्प लेती है। यह शोध पत्र उच्च शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्ता, इसके वैज्ञानिक आधार और वर्तमान पीढ़ी के लिए इसकी उपयोगिता का विश्लेषण करने का एक विनम्र प्रयास है

शोध के उद्देश्य एवं परिकल्पना

1. **उद्देश्य:** आधुनिक शिक्षा में प्राचीन भारतीय ज्ञान की उपयोगिता सिद्ध करना और उच्च शिक्षा में इसकी महत्ताा को प्रतिबिंबित करना।
2. **परिकल्पना:** प्राचीन भारतीय ज्ञान आधुनिक विज्ञान और मानवता को प्रोत्साहित करने वाला तथा उच्च शिक्षा हेतु एक स्वर्णिम पथ प्रदर्शक होगा।

प्रमुख बिंदु एवं विश्लेषण

अ. उद्भव एवं स्वरूप: भारतीय ज्ञान परंपरा की उत्पत्ति वेदों से मानी जाती है और यह समाज की सांस्कृतिक व वैज्ञानिक धारा से गहरे जुड़ी है। इसमें वैदिक साहित्य, उपनिषद, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद और संगीत कला शामिल हैं।

ब. उच्च शिक्षा में स्वर्णिम पथ प्रदर्शक: प्राचीन ज्ञान परंपरा उच्च शिक्षा को नवीन दृष्टिकोण प्रदान करती है:

1. **चिकित्सा:** सुश्रुत संहिता (शल्य क्रिया) और चरक संहिता (रोग उपचार)।
2. **गणित:** आर्यभट्ट और वराहमिहिर द्वारा विकसित शून्य प्रणाली, दशमलव पद्धति और बीजगणित।
3. **ब्रह्मांडीय ज्ञान:** ज्योतिष और पृथ्वी के परिभ्रमण का ज्ञान।
4. **दर्शन:** सांख्य, योग, अद्वैतवाद और मीमांसा जैसे षड्दर्शन।

स. वैज्ञानिक एवं तार्किक चिंतन– प्राचीन ज्ञान का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को समाहित करते हुए व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना था। ऋग्वेद के अनुसार, साथ चलने और एक स्वर में बोलने वाला समाज ही अपने युग को बेहतर बनाने की सामर्थ्य रखता है।

शिक्षा का उद्देश्य: 'साक्षरता' बनाम 'बोध'

आधुनिक शिक्षा सूचनाओं का ढेर तो प्रदान करती है, लेकिन चरित्र निर्माण में विफल रही है।

1. **समग्र विकास:** प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में 'परा विद्या' (आध्यात्मिक ज्ञान) और 'अपरा विद्या' (व्यावहारिक/सांसारिक ज्ञान) के बीच संतुलन था।
2. **अनुभवजन्य शिक्षा:** गुरुकुलों में छात्र केवल किताबें नहीं पढ़ते थे, बल्कि वे कृषि, गौ–सेवा, शास्त्र और शस्त्र का व्यावहारिक ज्ञान लेते थे। यह आज की 'स्किल डेवलपमेंट' की अवधारणा से कहीं अधिक उन्नत थी।
3. **समाधान:** शिक्षा में 'मूल्य आधारित शिक्षा' को शामिल करना

अनिवार्य है। शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति को केवल 'नौकरी पाने वाला' नहीं, बल्कि 'सत्य की खोज करने वाला' बनाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा – NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के समावेश को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. **जड़ों से जुड़ाव:** यह नीति मानती है कि ज्ञान केवल पश्चिम की देन नहीं है। गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, चिकित्सा (आयुर्वेद) और योग में भारत का योगदान अतुलनीय है। इन विषयों को आधुनिक पाठ्यक्रम में शामिल कर छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ सांस्कृतिक गौरव विकसित करना इसका लक्ष्य है।
2. **बहु-विषयक दृष्टिकोण:** प्राचीन भारतीय शिक्षा (जैसे नालंदा और तक्षशिला) समग्र थी। NEP 2020 इसी तर्ज पर विषयों के बीच की कठोर सीमाओं को हटाकर कला, विज्ञान और व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण पर जोर देती है।
3. **भाषाई संरक्षण:** भारतीय ज्ञान परंपरा का भंडार हमारी स्थानीय भाषाओं और संस्कृत में निहित है। नीति के अनुसार, कम से कम कक्षा 5 तक मातृभाषा में शिक्षा देने से छात्र अपनी संस्कृति और ज्ञान की गहराई को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे।
4. **चरित्र निर्माण:** 'सा विद्या या विमुक्तये' (विद्या वही है जो मुक्त करे) के आदर्श पर चलते हुए, यह नीति केवल डिग्री देने के बजाय मानवीय मूल्यों, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व पर केंद्रित है।

निष्कर्ष – प्राचीन ज्ञान परंपरा ने व्याकरण, खगोल विज्ञान और आयुर्वेद जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित कर मानव जाति की उन्नति में योगदान दिया है। उच्च शिक्षा में इन सिद्धांतों के समावेश से शिक्षार्थियों में चिंतनशीलता, तर्कशक्ति और रचनात्मकता का विकास हुआ है। यही परंपरा आज भारत को वैश्विक मानचित्र पर पुन: 'विश्वगुरु' के रूप में प्रतिविम्बित कर रही है। निष्कर्षत:, भारतीय ज्ञान परंपरा केवल एक प्राचीन विरासत नहीं है, बल्कि यह आधुनिक उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए एक अत्यंत प्रभावी और स्वर्णिम पथ-प्रदर्शक है। प्राचीन काल में तक्षशिला और नालंदा जैसे केंद्रों ने जिस समग्र शिक्षा पद्धति को अपनाया था, उसने न केवल बौद्धिक विकास किया, बल्कि चरित्र निर्माण और जीवन के उच्च मूल्यों को भी स्थापित किया। आज की व्यावसायिक और रोजगार-केंद्रित शिक्षा प्रणाली के बीच भारतीय ज्ञान परंपरा एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो छात्रों में केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि वास्तविक 'बोध' और 'प्रज्ञा' जागृत करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से इन प्राचीन मूल्यों को पुन: मुख्यधारा में लाना एक क्रांतिकारी कदम है, जो युवाओं के मानसिक, आध्यात्मिक और व्यावसायिक विकास में सहायक होगा। दर्शन, खगोल विज्ञान, आयुर्वेद और गणित जैसे क्षेत्रों में हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित कीर्तिमानों को आधुनिक शोध के साथ जोड़कर हम छात्रों में तार्किक चिंतन और रचनात्मकता का विकास कर सकते हैं। अंतत:, भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान के बीच एक मजबूत सेतु बनाकर ही भारत पुन: 'विश्वगुरु' के रूप में अपनी पहचान सुदृढ़ कर सकता है और संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए एक स्थायी विकास मॉडल प्रस्तुत कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पण्डित मधुसूदन ओझा: भारतवर्ष – द इण्डियन नरेटिव, रुपा 2017
2. ऋग्वेद।
3. विष्णु पुराण।
4. मनुस्मृति।
5. प्राचीन भारत का इतिहास।

****